प्रश्न: आपने कहा “सब कुछ मेरा है…इसलिए मेरा कुछ भी नहीं” इस बात को समज़ाए?

हर कोई इंसान वही चीज़ पाना चाहता है जो उनकी ना हो, अगर कार किसके पास ना हो तो वो चाहेगा की वो कार ख़रीद ले…अब कार उनके पास आ गई, अब वो कार उनकी हो गई, अब उनको उस कार में कोई इंट्रेस्ट नहीं है, वो कहता है होंडा तो उनके पास है BMW नहीं है, अब BMW लेनी है, कोई लड़की अच्छी लगी, उनसे शादी कर ली…अपनी पत्नी बना ली… अब पत्नी के लिए उनकी दोड पूरी हुई, फलेट नहीं था, फलेट ख़रीद लिया तो अब उन्हें बंगलो चाहिए, पर हक़ीक़त में होता यह की इंसानको ख़ुदको पता नहीं वो क्यूँ भाग रहा है, उनकी दोड किसके लिए है, ना फ़्लैट…बंगलो किसको शांति दे सकता है, शांति हमारे अंदर है, हम ख़ुद प्रेमरूप है, अगर कोई इस ख़ज़ाने को पा लेगा, इस अमृत का स्वाद चख लेगा फिर सारी चीज़ें बेकार है, अगर कोई जान ले की पूरा अस्तित्व उनका है, सबसे बड़ा ख़ज़ाना उनका है, फिर कोई क्यू कोई चीज़ की मालकियत चाहेगा, जो है सब कुछ मेरा है, इसिलए मेरीकोई दोड नहीं है, मेरीकोई चाहत नहीं है, इसिलए में क्यूँ कोई चीज़ को अपना बनाने के लिए प्रयत्न करूँ, इसिलए कोई भी चीज़ को में मेरा नहीं कहता क्योंकि जो पहले से ही मेरी हो उन्हें क्यूँ में मेरी कहु, हर इंसान कोई भी वस्तु को पाना इसिलए चाहता है ताकि वो उन्हें **अपनी कह सके**…कह सके की यह पत्नी मेरी है, यह कार मेरी है, यह फलेट मेरा है, अगर अंदर के ख़ज़ाने की खोज तरफ़ आप जाए तो एक दिन आएगा की आप कहोगे सब कुछ मेरा है… इसिलए मेरा कुछ भी नहीं।

Aasthit